भारतीय अर्थव्यवस्था (Indian Economy)

अर्थव्यवस्था: एक परिचय (Economy: An introduction)

अर्थव्यवस्था शब्द की उत्पत्ति 'अर्थ' एवं 'व्यवस्था' नामक दो शब्दों के संयुक्त होने से हुई है। अर्थ का तात्पर्य जहाँ 'मौद्रिक' से है वहीं व्यवस्था का तात्पर्य एक सुनिश्चित व सुनिश्चित व संस्थापित प्रणाली से है। सर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की 10वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, (GDP के आधार पर) तथा क्रयशक्ति समता (Purchasing Power Parity) के आधार पर इसका स्थान तीसरा है, इसके अतिरिक्त भारत दुनिया के 20 सबसे बड़े आयातकों व निर्यातकों में शामिल है। वर्ष 1991 के बाद भारत में आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया प्रारम्भ होने के बाद आज अपनी विशाल जनशक्ति, विविध प्राकृतिक संसाधन व वृहत अर्थव्यवस्था के मूलभूत तत्वों के कारण भारत विश्व की विशालतम व तीव्र गति से विकास कर रही अर्थव्यवस्था में से एक के आधार दुनिया में जाना जा रहा है।

अर्थव्यवस्था के विभिन्न प्रकार (Different Types of Economy)

अर्थव्यवस्था के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था (Capitalist economy) इस अर्थव्यवस्था को बाजार अर्थव्यवस्था या स्वतंत्र व्यापार प्रणाली की भी संज्ञा प्रदान की गई है। इस प्रणाली में उत्पादन के सभी महत्वपूर्ण साधनों का स्वामित्व, संचालन एवं नियंत्रण निजी उद्योगपतियों के हाथों में केन्द्रित होता है।

समाजवादी अर्थव्यवस्था (Socialist Economy)

आर्थिक विकास की वह प्रणाली जिसमें साधनों का आवंटन विनियोग की प्राथमिकताओं, उत्पादन के ढाँचे का निर्धारण मूल्य तथा लाभ की प्रेरणा से न होकर सामाजिक प्राथमिकताओं के आधार पर राज्य के द्वारा हो तो उसे समाजवादी अर्थव्यवस्था की संज्ञा दी जाती है।

मिश्रित अर्थव्यवस्था (Mixed Economy)

मिश्रित अर्थव्यवस्था में नीजी एंव सार्वजनिक क्षेत्र बाजार तन्त्र तथा राज्य की भूमिका घनिष्ट रूप से सम्बन्धित होती है तथा दोनों एक एकाई के घटक के रूप में कार्य करते हैं अर्थात यह एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है, जिसमें पूँजीवादी और समाजवादी दोनों ही विचारधाराओं का समन्वय होता है। भारत की अर्थव्यवस्था मिश्रित अर्थव्यवस्था के सिद्धान्त पर आधारित है।

कल्याणकारी अर्थशास्त्र (Walfare Economics)

यह एक ऐसा अर्थशास्त्र है, जो माइक्रों अर्थशास्त्र (व्यक्तियों के छोटे समूह की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन) तकनीक को अच्छी आर्थिक स्थिति, प्रतिस्पर्द्धा के सापेक्ष सामान्य सन्तुलन के रूप में एक अर्थव्यवस्था के भीतर आर्थिक दक्षता का विश्लेषण करता है। इसके परिणामस्वरूप आय से जुड़े सभी क्षेत्र का सामाजिक कल्याण का विश्लेषण होता है। भारतीय अर्थशास्त्री **अमर्त्य सेन** ने लोक कल्याणकारी

KDLIVE

अर्थशास्त्र की आवधारण का विकास किया था। इसके लिए इन्हें वर्ष 1998 में नोबेल पुरस्कार से सम्माजित किया गया।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र (Sectors of Economy)

सामान्यत: सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था की आर्थिक गतिविधियों को लेखांकित करने के लिए तीन क्षेत्रों में विभाजित किया जाता है।

प्राथमिक क्षेत्र (Primary Sector)

इसके अन्तर्गत अर्थव्यवस्था के प्राकृतिक क्षेत्रों का लेखांकन किया जाता है।

इसके अन्तर्गत निम्न क्षेत्रों को सम्मिलित किया जाता है।

- कृषि
- वानिकी
- मत्स्यन (मछली पकड़ना)
- खनन (ऊर्ध्वाधर खुदाई) एवं उत्खनन (क्षैतिज)

द्वितीयक क्षेत्र (Secondary Sector)

इस क्षेत्र के अन्तर्गत मुख्यत: अर्थव्यवस्था की विनिर्मित वस्तुओं के उत्पादन का लेखांकन किया जाता है।

- निर्माण, जहाँ किसी स्थायी परिसम्पत्ति का निर्माण किया जाए; जैसे- भवन।
- विनिर्माण, जहाँ किसी वस्तु का उत्पादन हो; जैसे- कपड़ा ब्रेड आदि।
- विद्युत, गैस एवं जलापूर्ति इत्यादि से सम्बन्धित कार्य।

तृतीयक या सेवा क्षेत्र (Tertiary Sector)

यह क्षेत्र अर्थव्यवस्था के प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र को अपनी उपयोगी सेवाएं प्रदान करता है, इसके अन्तर्गत निम्न क्षेत्र हैं।

- परिवहन एवं संचार
- बैंकिंग
- बीमा
- भण्डारण
- व्यापार
- सामुदायिक सेवाएं आदि।

कोर क्षेत्र (Core Sector)

भारतीय अर्थव्यवस्था में 8 क्षेत्रों को कोर क्षेत्र अर्थात् अति महत्वपूर्ण क्षेत्रकों की संज्ञा दी गई है, जो आर्थिक विकास के लिए अत्यधिक आवश्यक हैं।

आठ कोर क्षेत्र इस प्रकार हैं-

- केयला
- प्राकृतिक गैस
- उर्वरक
- सीमेण्ट
- कच्चा क्षेत्र
- रिफायनरी उत्पाद
- इस्पात
- विद्युत

विश्व बैंक द्वारा अर्थव्यव्था का वर्गीकरण (Classification of Economy By World Bank)

विश्व बैंक ने विश्व की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं को प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय उत्पाद के आधार पर वर्गीकृत किया है, जो निम्नलिखित हैं।

न्यूनतम आय अर्थव्यवस्था प्रति व्यक्ति आय $ 1036-$ 4085

मध्यम आय अर्थव्यवस्था प्रति व्यक्ति आय $ 1036- $ 4085

उच्च आय अर्थव्यवस्था प्रति व्यक्ति आय $ 4086- $ 12615

स्रोत वर्ष 2012-13 में विश्व बैंक के अनुसार

KD LIVE

राष्ट्रीय आय (National Income)

किसी देश द्वारा एक वर्ष में आर्थिक क्रियाओं के फलस्वरूप उत्पादित अन्तिम वस्तुओं व सेवाओं के मौद्रिक मूल्य के योग, को उस देश की राष्ट्रीय आय कहते हैं। इसके अन्तर्गत उन सभी अन्तिम वस्तुओं व सेवाओं के मूल्यों को शामिल करते हैं, जो देश के निवासियों द्वारा अर्जित की गई हैं। इसमें देश के निवासियों द्वारा विदेशों में भी अर्जित की गई है। इसमें देश के निवासियों द्वारा विदेशों में भी अर्जित आय को शामिल किया जाता है। राष्ट्रीय आय को 'राष्ट्रीय उत्पाद' के नाम से भी जाना जाता है।

भारत में राष्ट्रीय आय की गणना केन्द्रीय सांखिकी संगठन द्वारा वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च तक के आधार पर की जाती है।

राष्ट्रीय आय का मापन (Measurement of National Income)

राष्ट्रीय आय का मापन निम्न आधारों पर किया जाता है।

- राष्ट्रीय आय का मापन मुद्रा के रूप में होता है। राष्ट्रीय आय के अन्तर्गत पुरानी वस्तुओं के मूल्य को मध्यवर्ती वस्तुओं के मूल्य में शामिल नहीं किया जाता है।
- घरेलू सेवाएं तथा वित्तीय परिसम्पत्तियों को (अंश-पत्र, ऋण-पत्र, आदि का क्रय-विक्रय तथा हस्तान्तरण भुगतान, वजीफा, पेंशन भत्ता) राष्ट्रीय आय के अन्तर्गत शामिल किया जाता है।
- देश के सामान्य निवासियों द्वारा विदेशों में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के अन्तिम मूल्य को राष्ट्रीय आय के अन्तर्गत शामिल किया जाता है।

राष्ट्रीय आय की गणना (Estimation of National Income)

राष्ट्रीय आय की गणना सामान्यत: चालू तथा स्थिर दोनों मूल्यों पर की जाती है।

1. **चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय (National Income at Current Price)**: यह राष्ट्रीय आय को प्रचलित बाजार मूल्य पर मापने की विधि है, इसे मौद्रिक आय भी कहते हैं। कीमतों में प्राय: परिवर्तन होता रहता है। इसके परिणामस्वरूप वस्तुओं एवं सेवाओं की मात्रा में बिना कोई परिवर्तन हुए चालू कीमतों पर राष्ट्रीय आय का कम या अधिक हो सकती है।
2. स्थिर कीमतों परा राष्ट्रीय आय (National Income at Constant Price): यह एक लेखा वर्ष के दौरान एक राष्ट्र के सामान्य नागरिकों द्वारा उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं का वह मौद्रिक मूलय है, जो किसी आधार वर्ष के मूल्यों पर मापा जाता है। स्थिर कीमतों पर राष्ट्रय आय को 'वास्तविक राष्ट्रीय आय' कहते हैं।

राष्ट्रीय आय से ससम्बन्धित अवधारणाएं (Concepts of National Income)

राष्ट्रीय आय की गणना के सम्बन्ध में मूलत: दो अवधारणाओं- राष्ट्रीय उत्पाद तथा घरेलू उत्पाद को आधार स्वरूप लिखा जाता है। शेष सभी धारणाएं इन धारणाओं पर आधारित इनके प्रतिरूप स्वरूप हैं।

राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित अवधारणाएं निम्नलिखित हैं

सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product, GDP)

KD LIVE

एक लेखा वर्ष के दौरान देश की घरेलू सीमा में सभी उद्यमियों द्वारा (निवासी/अनिवासी दोनों) की गई सकल मूल्य वृद्धि को सकल घरेलू उत्पाद कहते हैं इसमें वे अनिवासी उद्यमी भी सम्मिलित होते हैं, जिन्होंने देश के उत्पादन में योगदान दिया हो।

इनके अन्तर्गत देश की भौगोलिक सीमा के अन्दर विदेशियों द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं को भी शामिल किया जाता है। सकल घरेलू उत्पाद को निम्न सूत्र में व्यक्त किया जात सकता है।

GDP = उपभोग (C) + निवेश (I) +उपभोग व्यय (G)

विभिन्न क्षेत्रों का जी डी पी में योगदान

क्षेत्र	अंश में	कार्य बल में
उद्योग	26%	22%
सेवा	57%	27%
पर्यटन	6.23%	8.78%
कृषि	17%	51%

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product, GNP)

सकल राष्ट्रीय उत्पाद की अवधारणा सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की अवधारणा की तुलना में कहीं अधिक विस्तृत है। घरेलू उत्पाद में शुद्ध विदेशी साधन आय को जोड़कर इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

किसी देश के नागरिकों द्वारा एक निश्चित समयावधि, सामान्यत: एक वर्ष में उत्पादति अन्तिम वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) कहा जाता है।

सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) = जी डी पी + देशवासियों द्वारा विदेशों में अर्जित आय (X)- विदेशियों द्वारा भारत में अर्जित आय (M)

GNP = GDP + X – M

शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product, NNP)

जब GNP में से मूल्य ह्रास (पूँजी स्टॉक की खपत) को घटाने हैं तो शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात होता है।

NNP = GNP – पूँजी स्टॉक की खपत

वैयक्तिक आय (Personal Income, PI)

घरेलू क्षेत्र द्वारा प्राप्त आय को ही वैयक्तिक आय (Personal Income) कहते हैं। यह देशवासियों द्वारा वास्तव में प्राप्त आय है। वैयक्तिक आय को ज्ञात करने के लिए राष्ट्रीय आय में से निगम करों तथा निगमों द्वारा अवितरित लाभांश एवं सामाजिक सुरक्षा योजना के लिए भुगतान को घटाने एवं सरकारी हस्तान्तरण भुगतान, व्यापारिक हस्तान्तरण भुगतान एवं सरकार से प्राप्त शुद्ध ब्याज को जोड़ने से प्राप्त होती है। वैयक्तिक आय = राष्ट्रीय आय-निगम कर-निगमों का अवितरित लाभांश- सामाजिक सुरक्षा योजना का भुगतान + सरकारी हस्तान्तरण भुगतान + सरकार से प्राप्त शुद्ध ब्याज

व्यय योग्य वैयक्तिक आय (Disposable Personal Income, DPI)

राष्ट्रीय आय का वह भाग जिसका योग अपनी इच्छा से जब चाहे खर्च कर सकते हैं, उसे व्यय योग्य वैयक्तिक आय (Disposable Personal Income, DPI) कहा जाता है।

KD LIVE

सभी प्रकार के प्रत्यक्ष कर चुकाने के बाद जो आय बचती है, उसको लोग अपनी इच्छानुसार व्यय कर सकते हैं या बचत कर सकते हैं।

DPI = उपभोग + बचत

DPI = व्यक्तिगत आय + प्रत्यक्ष कर + सब्सिडी

वास्तविक राष्ट्रीय आय (Real National Income, RNI)

किसी देश में राष्ट्रीय आय की वृद्धि के कारण प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को वास्तविक राष्ट्रीय आय (Real National Income) कहते हैं। इसे आर्थिक वृद्धि के सूचक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

निजी आय (Private Income, PI)

सरकारी क्षेत्र के अतिरिक्त निजी क्षेत्र द्वारा प्राप्त की गई कुल आय को निजी आय (Private Income) कहते हैं। इसमें निजी निगम क्षेत्र एवं घरेलू क्षेत्र दोनों शामिल किए जाते हैं।

साधन लागत एवं बाजार मूल्य (FC and MP)

साधन लागत (Factor Cost, FC) वास्तव में किसी वस्तु के उत्पादन में लगी लागत मूल्य (Input Cost, IC) होती है। सरकार द्वारा इस लागत मूल्य पर या तो सब्सिडी दी जाती है अथवा इस पर कर लगाया जाता है। यदि कर लगाया जाता है, तो वस्तु का बाजार मूल्य (Market Price, MP) बढ़ जाती है। और यदि सब्सिडी दी जाती है, तो बाजार मूल्य लागत मूल्य से कम हो जाता है।

राष्ट्रीय हरित आय

सकल राष्ट्रीय जो कि पर्यावरण हतल के मूल्य को घटाने के पश्चात शुद्ध रूप में प्राप्त होता है, राष्ट्रीय आय कहलाता है।

राष्ट्रीय हरित आय = कुल वृद्धि – पर्यावरण ह्रास

राष्ट्रीय आय के मापन की विधियाँ (Methods of Measuring National Income)

राष्ट्रीय आय साधन पर आकलित निवल राष्ट्रीय उत्पाद है। साइमन कुजनेट्स, जो राष्ट्रीय आय लेखांकन (National Income Accounting) के जन्मदाता हैं, ने राष्ट्रीय आय के मापन की निम्न तीन विधियाँ प्रस्तुत की हैं।

1. उत्पाद पद्धति 2. आय पद्धति
3. व्यय पद्धति

उत्पाद पद्धति (Production Method)

कुजनेट्स ने इस विधि को वस्तु सेवा विधि के नाम से परिभाषित किया है। इस पद्धति के अन्तर्गत देश में एक वर्ष में उत्पादित अन्तिम वस्तओं तथा सेवाओं का शुद्ध मूल्य ज्ञात किया जाता है। तथा उसके योग्य अन्तिम उपज योग (Final Product Total) कहा जाता है।

यह वास्तव में सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domistic Product, GDP) को दर्शाता है। राष्ट्रीय आय (साधन लागत पर शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद) की गणना के लिए सकल घरेलू उत्पाद के मूल्य में विदेशों में अर्जित शुद्ध आय को जोड़ा जाता है। तथा मूल्य ह्राय को घटाया जाता है।

KD LIVE

आय पद्धति (Income Method)

इस पद्धति के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय की गणना के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत व्यक्तियों तथा व्यावसायिक उपक्रमों की शुद्ध आय का योग प्राप्त किया जाता है।

डॉ. बाउले तथा **रॉर्टसन** के अनुसार, आय गणना विधि के अन्तर्गत आयकर देने वाले तथा आयकर न देने वाले समस्त व्यक्तियों की आय को जोड़ दिया जाता है।

व्यय पद्धति (Expenditure Method)

इस विधि को उपयोग बचत विधि भी कहते हैं। इस विधि के अनुसार कुल आय या तो उपभोग पर व्यय की जाती है अथवा बचत पर। अत: राष्ट्रीय आय कुल उपभोग तथा कुल बचतों का योग होती है। इस विधि से आय की गणना करने के लिए उपभोक्ताओं की आय तथा उनकी बचत से सम्बन्धित ऑकड़ों का उपलब्ध होना आवश्यक होता है। भारत जैसे देश में राष्ट्रीय आय की गणना के लिए उत्पादन प्रणाली (Production Method) तथा आय प्रणाली (Income Method)का सम्मिश्रण प्रयोग किया जाता है।

राष्ट्रीय आय = कुल उपभोग व्यय + कुल बचत

क्रय शक्ति समता विधि

(Purchasing Power Parity Method, PPP)

इस विधि का प्रयोग सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष द्वारा वर्ष 1998 में विभिन्न देशों के रहन-सहन स्तर के निर्धारण हेतु किया गया। इस विधि में किसी देश विशेष की सकल राष्ट्रीय आय को, देश के भीतर मुद्रा की क्रय शक्ति के आधार पर किया जाता है। वर्तमान में इस विधि का प्रयोग विश्व बैंक द्वारा किया जा रहा है।

भारत में राष्ट्रीय आय की गणना

(Estimation of National Income in India)

भारत में राष्ट्रीय आय एवं सम्बन्धित पक्षों की गणना का कार्य केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO) द्वारा किया जाता है।

भारत में सर्वप्रथम राष्ट्रीय आय के सन्दर्भ में अनुमान 1868 ई. में **दादा भाई नौरोजी** द्वारा, उनकी पुस्तक **'पावर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया'** में व्यक्त किया गया। दादभाई नौरोजी ने प्रति वार्षिक आय ₹20 बताई थी। वर्ष 1931-32 में डॉ. वी के आर वी राव ने सर्वप्रथम वैज्ञानिक विधि से राष्ट्रीय आय और राष्ट्रीय लेखा प्रणाली की गणना की। वर्षा 1948-49 में **प्रो. पी सी महालनोबिस** की अध्यक्षता में राष्ट्रीय आय समिति की नियुक्ति हुई, जिसकी अनुशंसा पर राष्ट्रीय आय सम्बन्धि त लेखा प्रणाली का ढ़ाँचा स्थापित हुआ तथ केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन की स्थापना की गई। वर्ष 1967 में पहली बार विदेशी व्यवहार को राष्ट्रीय आकलन में जोड़ा गया। राष्ट्रीय आय के अनुमान का सबसे पहला सरकारी अनुमान वर्ष 1948-49 में वाणिज्य मन्त्रालय द्वारा किया गया।

भारत में राष्ट्रीय आय की गणना से सम्बन्धित प्रमुख संगठन

राष्ट्रीय-आय की गणना से सम्बन्धित प्रमुख संगठन इस प्रकार हैं

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सवोक्षण संगठन

(National Sample Surwey Organisation, NSSO)

KD LIVE

जनवरी, 1971 में राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO) की स्थापना की गई। NSS अब NSSO का एक अंग बन गया तथा इसका कार्य सर्वेक्षण तक सीमित रहा। 12 जुलाई, 2006 को प्रो. सुरेश तेन्दुलकर की अध्यक्षता में स्थापित राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग के कार्य शुरू करने के साथ NSSO अर्थहीन हो गया। है।

केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन

(Central Statistical Organisation, CSO)

CSO की स्थापना मई, 1951 में की गई। CSO सांख्यिकी और कार्यक्रम क्रियान्वयन मन्त्रालय का एक भाग है। यह भारत में राष्ट्रीय आय तथा उससे सम्बन्धित सभी पक्षों की गणना का कार्य करता है। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है तथा इसकी औद्योगिक शाखा का मुख्यालय कोलकाता में है। यह अपना वार्षिक प्रकाशन 'राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी' के नाम से प्रतिवर्ष जारी करता है।

CSO ने राष्ट्रीय आय सम्बन्धी आँकड़ों की गणना के लिए वर्ष 2004-05 को आधार वर्ष के रूप में स्वीकार किया है।

CSO देश में राष्ट्रीय आय की गणना हेतु उत्पादन एवं आय दोनों प्रणाली का प्रयोग करता है। CSO द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था को 3 क्षेत्रों तथा 14 उपक्षेत्रों में (राष्ट्रीय आय के आकलन हेतु) विभाजित किया गया है।

राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग

(National Statistical Organisation, NSC)

सी. रंगराजन समिति द्वारा वर्ष 2000 में दिए गए सुझाव के आधार पर 1 जुन, 2005 को स्थायी सांख्यिकी आयोग गठित किया गया। 12 जुलाई, 2006 को **प्रो. सुरेश तेन्दुलकर** की अध्यक्षता में इसने (NSC) कार्य प्रारम्भ किया। राष्ट्रीय सांख्यिकी आयोग की स्थापना के साथ ही राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (NSSO) का कार्य लगभग समाप्त हो चुका है, किन्तु NSSO द्वारा आर्थिक सर्वोक्षण का कार्य अब भी जारी है।

आर्थिक संवृद्धि (Economical Growth)

आर्थिक संवृद्धि का तात्पर्य प्रति व्यक्ति वास्तविक आय अथवा शुद्ध भौतिक उत्पाद में वृद्धि से है। सामान्यत: यदि सकल राष्ट्रीय उत्पाद, सकल घरेलू उत्पाद तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होती है तो हम कह सकते हैं कि आर्थिक संवृद्धि हो रही है। दूसरे शब्दों में साधन लागत पर व्यक्त वास्तविक घरेलू उत्पाद, राष्ट्रीय उत्पाद तथा प्रति व्यक्ति आय को हम सामान्यत: आर्थिक संवृद्धि संवृद्धि की आय के रूप में स्वीकार करते हैं।

आर्थिक संवृद्धि दर (Economic Growth Rate)

निवल राष्ट्रीय उत्पाद में परिवर्तन की दर 'आर्थिक संवृद्धि दर' (Economic Growth Rate) कहलाती है, इसको राष्ट्रीय आय की वृद्धि दर भी कहा जाता है।

गतवर्ष की तुलना में वर्तमान वर्ष की एन एन पी

$$= \frac{\text{NNP में परिवर्तन (वृद्धि या कमी)}}{\text{गत वर्ष का एन एन पी (NNP)}} \times 100$$

KD LIVE

विकासशील देशों में आर्थिक संवृद्धि दर को विकास हेतु परिवर्तित करना अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी समस्या है।

ट्रिकलडाउन इफैक्ट

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन **रोनाल्ड रीगन** ने वर्ष 1981 में किया, इसके अनुसार जब किसी अर्थव्यवस्था में तीव्र आर्थिक संवृद्धि होती है तो उस संवृद्धि का लाभ अर्थव्यवस्था मे रिस-रिस कर अर्थव्यवस्था के निचले स्तर तक जाता है, जिससे आर्थिक संवृद्धि का लाभ सभी को प्राप्त होता है।

आर्थिक विकास (Economic Development)

आर्थिक विकास का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जिसके परिणामस्वरूप देश के समस्त उत्पादन साधनों का कुशलतापूर्वक विदोहन होता है। राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में निरन्तर एवं दीर्घकालिक वृद्धि होती है तथा जनता के जीवन स्तर एवं सामान्य काल्याण का सूचकांक बढ़ता है। अर्थात इसमें आर्थिक एवं गैर-आर्थिक दोनों को शामिल किया जाता है। आर्थिक संवृद्धि एक मात्रात्मक संकल्पना है, जबकि आर्थिक विकास एक गुणात्मक।

पहले का सम्बन्ध 'राष्ट्रीय आय' एवं 'प्रति व्यक्ति आय' की वृद्धि-दर से जुड़ा है, जबकि दूसरे का सम्बन्ध राष्ट्रीय आय में मात्रात्मक वृद्धि के अलावा अर्थव्यवस्था के संरचनात्मक ढाँचे में परिवर्तन से हाता है।

आर्थिक विकास में कृषि की अपेक्षा, उद्योगों, सेवाओं, बैंकिंग, विनिर्माण आदि क्षेत्रों का सकल राष्ट्रीय आय में हिस्सा अधिक होता है। **आर्थिक संवृद्धि** राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि (यह एक परिमाणात्मक परिवर्तन है।) **आर्थिक विकास** राष्ट्रीय उत्पाद के साथ-साथ जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार (यह परिमाणात्मक के साथ एक गुणात्मक परितर्वन भी है)।

आर्थिक विकास दर (Economic Development Rate)

सकल घरेलू उत्पादन में परिवर्तन की दर 'आर्थिक विकास दर' कहलाती है। गतवर्ष की तुलना में वर्तमान वर्ष की एन एन पी

आर्थिक विकास दर

$$= \frac{\text{GDP में परिवर्तन (वृद्धि या कमी)}}{\text{गत वर्ष का एन एन पी (NNP)}} \times 100$$

आर्थिक संवृद्धि बनाम आर्थिक विकास (Economical Growth Vs Development)

आर्थिक संवृद्धि बनाम आर्थिक विकास के मध्य अन्तर के प्रमुख बिन्दु इस प्रकार है

- आर्थिक संवृद्धि और विकास समान प्रतीत होने वाली अवधारणाएं हैं, परन्तु तकनीकी दृष्टि से दोनों समान नहीं हैं।
- आर्थिक संवृद्धि से आशय सकल घरेलू उत्पाद (GDP), एवं प्रतिव्यक्ति आय में निरन्तर होने वाली वृद्धि से है अर्थात आर्थिक संवृद्धि उत्पादन में लगातार वृद्धि हो रही है, तो इसे संवृद्धि की संज्ञा दी जाएगी।
- आर्थिक संवृद्धि से यह पता चलता है कि अर्थव्यवस्था के विभिन्न स्त्रोतों में मात्रात्मक रूप से कितनी वृद्धि हो रही है।
- आर्थिक विकास का सम्बन्ध लोगों के कल्याण से है, इसमें गरीबी, बेरोजगारी तथा असमानता में कमी आती है। आर्थिक संवृद्धि आर्थिक विकास की पूर्व शर्त है।

KDLIVE

आर्थिक विकास का मान

(Measurement Of Economic Development)

विभिन्न देशों के आर्थिक विकास के मापन तथा तुलनात्मक स्थिति को प्रकट करने के निम्नलिखित दृष्टिकोण मिलते हैं

- क्रय-शक्ति क्षमता विधि
- मानव विकास सूचकांक
- ग्रीन जी एन पी
- आधारभूत आवश्यक प्रत्यागम
- निवल आर्थिक कल्याण
- निर्धनता सूचकांक
- पोषण निवल राष्ट्रीय उत्पाद
- लिंग आधारित विकास सूचकांक
- राष्ट्रीय संवृद्धि सूचकांक

आर्थिक विकास को निर्धारित करने वाले कारक

(Factors Determining economic Growth)

आर्थिक विकास को निर्धारित करने वाले घटकों को दो मुख्य भागों में वर्गीकृत कर सकते हैं।

आर्थिक घटक (Economic factor)

- प्राकृतिक संसाधन
- संगठन
- तकनीकी प्रगति
- पूँजी निर्माण
- विकासात्मक नियोजन
- पूँजी उत्पादन अनुपात
- श्रम-शक्ति एवं जनसंख्या
- वित्तीय स्थिरता
- आधारभूत संरचना

गैर-आर्थिक घटक (Non-Financial Componenet)

- सामाजिक घटक
- धार्मिक घटक
- राजनीतिक घटक

मूलभूत आवश्यक प्रत्यागम (Basic Necessity)

ये मानव विकास के मापन हेतु प्रयोग में लाए, जाने वाले सामाजिक सूचकांक हैं, जिसका प्रतिपादन **हिक्स व स्ट्रीटन** ने किया है, ये निम्नलिखित हैं

- प्राथमिक शिक्षा
- जीवन-प्रत्यशा
- प्रतिव्यक्ति-ऊर्जा उपभोग
- बाल मृत्यु-दर
- स्वच्छ अलापूर्ति
- आवास

महत्वपूर्ण विकास सूचकांक/संकेतक Important Growth Index/Indicators)

विकास सूचकांक द्वारा विभिन्न देशों के जीवन स्तर, साक्षरता और जीवन प्रत्याशा को मापने का तुलनात्मक पैमाना है।

महत्वपूर्ण विकास सूचकांक निम्नलिखित हैं।

1. मानव विकास सूचकांक
2. जीवन का भौतिक गुणवत्ता सूचकांक
3. बहु-आयामी निर्धनता सूचकांक
4. वैश्विक भूखमरी सूचकांक
5. लैंगिक विकास सूचकांक
6. मानव गरीबी सूचकांक
7. राष्ट्रीय समृद्धि सूचकांक

KD LIVE

1. मानव विकास सूचकांक (Human Development Index, HDI)

मानव विकास सूचकांक की अवधारणा का प्रतिपादन वर्ष 1990 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) में सम्बद्ध अर्थशास्त्रियों महबूब उल-हक, ए. के. सेन तथा सिंगर हंस ने किया था। मानव विकास सूचकांक स्वास्थ्य, शिक्षा व आय के स्तर को आधार पर तैयार किया जाने वाला संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) का सूचकांक है। HDI का अधिकतम मूल्य 1 तथा न्यूनतम मूल्य 0 होता है। एच डी आर वर्ष 2010 में, विषमता समायोजित एच डी आई बहुआयामी गरीबी सूचकांक (MPI) तथा जेण्डर इनइक्वलिटी इण्डेक्स (GII) की धारणा विकसित की गई है, जिसे यदि HDI में जोड़ दिया जाए तो आर्थिक विकास का अधिक स्पष्ट चित्र आ सकता है।

मानव विका सूचकांक की रचना तीन सूचकों के आधार पर होती है।

(i). जीवन-प्रत्याशा सूचकांक

(ii). शिक्षा सूचकांक

(iii). जीवन-निर्वाह का स्तर जिसमें क्रय-शक्ति, समायोजत प्रति व्यक्ति आय (डॉलर में) व्यक्त करते हैं।

मानव विकास सूचकांक के आधार पर वर्गीकरण

वर्ग	एचडीआई का मान-विस्तार
अति उच्च	1.00-0.900
उच्च	0.899-0.800
मध्यम	0.799-0.500
निम्न	0.499-0.000

जीवन प्रत्याशा (Life Expectancy)

प्रतिवर्ष UNDP द्वारा मानव विकास सूचकांक के आधार पर मानव विकास रिपोर्ट प्रकाशित की जाती है, इसमें जन्म के समय जीवन प्रत्याशा को स्वाथ्य का सूचक माना जाता है।

शैक्षणिक उपलब्धि (Educational Achievement)

ज्ञान या शैक्षणिक उपलब्धि के मापन हेतु वयस्क साक्षरता तथा संयुक्त नामांकन अनुपात (प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा में नामांकन) का उपयोग किया जाता है। बालिग साक्षरता को दो-तिहाई वजन तथा संयुक्त नामांकन अनुपात को एक-तिहाई वजन दिया जाता है।

प्रति व्यक्ति आय (Per Capita Income)

इसे मापने हेतु प्रति व्यक्ति सकल देशीय उपाद को आधार बनाया गया है, जिसमें जीवन-स्तर प्रभावित होता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि मानव विकास सूचकांक तीन सूचकांकों- जीवन प्रत्याशा सूचकांक, शिक्षा सूचकांक तथा सकल राष्ट्रीय आय का औसत सूचकांक है। इस सूचकांक के लिए स्वास्थ्य स्तर का अकलन जीवन-प्रत्याशा (Expectancy of Life) के द्वारा, शैक्षणिक स्तर का प्रौढ़ साक्षरता और प्राथमिक, द्वितीयक एवं तृतीयक एवं तृतीयक स्तर पंजीकरण के आधार पर तथा रहन सहन का स्तर का आकलन आय के स्तर एवं क्रय-शक्ति क्षमता के आधार पर किया जात है।

सकल राष्ट्रीय खुशहाल (Gross National Happiness, GNH)

KDLIVE

जीएनएच देश की गुणवत्ता को अधिक समग्र तरीके से मापनता हे। और इसके तहत ऐसा विश्वास किया जाता है कि मानव समाज का विकास तब होता है, जब भौतिक और आध्यात्मिक विकास साथ-साथ होते हैं और वे एक-दूसरे के पूरक होते हैं। इसकी अवधारणा वर्ष 1972 में भूटान के नरेश **जिम्में सिंगे वांगचुक** ने की थी। मेड जॉन के अनुसार, जी एन एच को मापने के लिए सात खुशी पर विचार किए जाते हैं।

1. शारीरिक
2. मानसिक
3. अच्छा शासन
4. सामाजिक
5. आर्थिक
6. कार्यस्थल
7. पारिस्थितिक जीवन शक्ति

भारत की मानव विकास रिपोर्ट (HDR, India)

सर्वप्रथम वर्ष 1995 में मध्य प्रदेश ने अपनी मानव विकास रिपोर्ट जारी की थी बाद में कर्नाटक, गुजरात तथा राजस्थान द्वारा भी मानव विकास रिपोर्ट जारी की गई है।

भारत (UNDP) कण्ट्री प्रोग्राम दस्तावेज (2013-17)

नया कण्ट्री प्रोग्राम दस्तावेज (2013-17) पर आधारित है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत चार मुख्य बातों का समाहित किया गया है; समाविष्ट वृद्धि, गवर्नेंस, धाराणीय विकास एवं लैंगिक समानता आदि।

2. जीवन का भौतिक गुणवत्ता सूचकांक (Physical Quality of Life Index, PQLI)

इस अवधारणा का विकास वर्ष 1979 में **मैरिश डी मैरिश** ने किया, इन्होंने विकास के प्रयासों के परिणामों को व्यापक अर्थ में प्रस्तुत करने के लिए इन्होंने विकास के प्रयासों के परिणामों को व्यापक अर्थ में प्रस्तुत करने के लिए तीन संकेतकों का चुनाव किया, जो निम्नलिखित हैं।

(i). जीवन-प्रत्याशा (Life Expectancy)

(ii). शिशु- मृत्यु-दर (Infant Mortality Rate)

(iii). मौलिक साक्षरता (Basic Literacy)

3. बहु-आयामी निर्धानता सूचकांक (Multi-dimensional Poverty Index, MPI)

बहु-आयामी निर्धनता सूचकांक का विकास वर्ष 2010 में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) एवं ऑक्सफोर्ड निर्धनता एवं मानव विकास की पहल पर हुआ।

इस सूचकांक के निम्न तीन आयाम और 10 संकेतक हैं। इन सभी संकेतकों को समान महत्त्व प्राप्त है।

आयाम	संकेतक
स्वास्थ्य	शिशु मृत्यु; पोषण
शिक्षा	विद्यालय अवधि; विद्यार्थी नामांकर
जीवन-स्तर	भोजन पकाने के लिए ऊर्जा, पानी विद्युत, शौचालय, आवास, सम्पत्ति

4. वैश्विक भुखमरी सूचकांक (Global Hunder Index, GHI)

KDLIVE

वैश्विक भुखमरी सूचकांक में एक बहु-आयामी सांख्यिकी ऑकड़ों का प्रयोग कर देश की भुखमरी के सन्दर्भ में स्थिति को स्पष्ट किया जात है। इस सूचकांक को इण्टरनेशनल फूड पॉलिसी रिसर्च इन्स्टीट्यूट द्वारा विकसित किया गया था, इाकर सर्वप्रथम प्रकाशन वर्ष 2006 में हुआ। यह सूचकांक प्रतिवर्ष निकाला जाता है। प्रत्येक वर्ष इस सूचकांक में किसी एक मुख्य मुद्दे पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जेकि भुखमरी को प्रभावित करता है। वैश्चिक भूखमरी सूचकांक तीन मानकों के आधार पर निकाला जाता है।

(i). अल्प पोषित लोगों का अनुपात।

(ii). पाँच वर्ष से कम आयु के औसत से कम वजन के बच्चे का अनुपात।

(iii). पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु-दर

5. लौंगिक विकास सूचकांक

(Gender Development Index, GDI)

इस सूचकांक को UNDP ने वर्ष 1995 में विकसित किया था। लैंगिक विकास सूचकांक (GDI) मानव विकास के तीन आयामों- जीवन-प्रत्याशा, साक्षरता और प्रति व्यक्ति आय के सन्दर्भ में पुरूष जनसंख्या के सापेक्ष महिला जनसंख्या की उपलब्धि को दर्शाता है।

महत्वपूर्ण तथ्य (Important Facts)

- मानव विकास सूचकांक का विचार सर्वप्रथम पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब-उल-हक ने दिया था।
- राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वोक्षण संगठन की स्थापना वर्ष 1950 में की गई थी।
- वैश्विक भुखमरी सूचकांक में भारत की उपलब्धि 21.3 है, जोकि काफी बुरी स्थिति की ओर इशारा करती है।

6. **मानव गरीबी (Human Poverty Index, HPI)**

इसमें अग्रलिखित सूचकांकों को शामिल किया जाता है जीवन-प्रत्याशा, साक्षरता, आय तथा सामाजिक वंचन। इसके आधार पर समाज की अभावग्रस्तता का पता लागया जाता है। विकासशली और विकसित देशों के लिए अलग-अलग सूचकाकों की संकल्पना है। विकासशील देशों के लिए HPI-I की संकल्पना एवं विकसित देशों के लिए PHI- 2 की संकल्पना है।

विकासशील देशों के लिए HPI- 1 की संकल्पना

(i). इस संकल्पना के अन्तर्गत जनसंख्या के उस भाग का पता लगाया जाता है, जिसकी जीवन-प्रत्याशा 40 वर्ष या उससे कम हो।

(ii). प्रौढ़ शिक्षा दर 15 वर्ष से अधिक उम्र वाले जनसंख्या के उस भाग का पता लगाया जात है, जो निरक्षर है।

(iii) स्वच्छ पेयजल से वंचित जनसंख्या का प्रतिशत

(iv). 5 वर्ष तक की आयु वाली जनसंख्या के उस भाग का प्रतिशत जिसका वजन औसत से कम है।

विकसित देशों के लिए HPI- 2 की संकल्पना

1. इसके अन्तर्गत जनसंख्या के उस अंश का पता लगाया जाता है, जिसकी जीवन प्रत्याशा 60 वर्ष से कम है।
2. श्रम शक्ति के उस अंश का पता लगाया जाता है, तो पिछले 12 महीने से बेरोजगार है और सामाजिक रूप सेवंचित है, जिनकी आय माध्यम-आय के 50% से कम है। इस प्रकार HPI क्रय क्षमता पर आधारित आय और प्रति व्यक्ति आय को समाहित करता है।

KD LIVE

7. **राष्ट्रीय सूचकांक (National Prosperity Index, NPI)**

सामाजिक-आर्थिक विकास के मापन को मानक सूचकांक, राष्ट्रीय समृद्धि सूचकांक को माना जाता है। इसके तीतन घटक हैं।

(i) GDP की वृद्धि दर

(ii). जीवन की गुणवत्ता में सुधार (मुख्यत: गरीबी रेखा से नीचे के लोगों का)

(iii). अपनी सांस्कृतिक विरासत पर आधारित नौतिक मूल्य प्रणाली का जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रयोग करना।

उल्लेखनीय है कि जीवन की गुणवत्ता में सुधार, शुद्ध पेयजल, पोषण, आवासीय व्यवस्था, उचित सफाई, उत्तम स्वास्थ्य सुविधा, अच्छी शिक्षा तथा रोजगार आदि सम्भावव्यताओं का फलन है। जबकि सांस्कृतिक विषमता का अभाव, सहभागिता समरसता तथा संयुक्त परिवार प्रणाली को प्रोत्साहित करने पर निर्भर करती है।

KD LIVE